संस्कृत-प्रचार-पुस्तक-माला सं० ५

नारीधर्म-शिक्षा

विभिन्न संस्कृत धर्म-ग्रन्थों के नारीधर्म-सम्बन्धी उत्तमोत्तम अंशो का सानुवाद संग्रह

सम्पादक—
श्री वासुदेव द्विवेदी वेदशास्त्री साहित्याचार्य
(सम्पादक—संस्कृत-प्रचार-पुस्तक-माला)

प्रकाशक—
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
काशी

कृतज्ञता-प्रकाश

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन महिलाओं ने हमें आर्थिक सहयोग दिया है उनकी नामावली नीचे प्रकाशित की जा रही है। ये महिलायें स्वयं संस्कृत नहीं जानतीं और इस प्रकार इस पुस्तक से उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं हैं तथापि इन्होंने केवल संस्कृत भाषा और धर्म के प्रचार की दृष्टि से यह सहयोग दिया है और एतदर्थ हम उन्हें

भाग्य के लिए भगवान्

र के निवासी
नन्दनसिंहजी
उन्हें भी अने-

वली

री देवरिया ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)
,, ५)

विषय-सूची

१—वात्स्यायन कामसूत्रमें नारीधर्म, १—१८
२—मनुस्मृति में नारीधर्म, १८—१९
३—श्रीमद्भागवत में नारीधर्म, १९—२०
४—कौन २ काम स्त्रियों को नहीं करना चाहिये, २१—२२
५—कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी नहीं रहती है, २२
६—कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी रहती है, २२
७—किस घर में दरिद्रता का निवास होता है, २३
८—किस घर में दरिद्रता नहीं जाती २४
९—स्त्रियों के विगड़ने के कारण २४
१०—कुलीन स्त्रियों के कर्तव्य २५
११—लज्जाशील स्त्रियों का स्वभाव २६
१२—स्त्रियों के लिये पूजापाठ के श्लोक एवं मन्त्र २७

नारी-महिमा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

जहाँ स्त्रियों का आदर-सम्मान होता है वहाँ सभी देवता निवास करते हैं ।

अपत्यं धर्म-कार्याणि शुश्रूषा रत्तिरुत्तमा ।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितॄणामात्मनश्च ह ॥

सन्तानकी उत्पत्ति और उसका लालन-पालन, समस्त धर्म कार्य, सेवा, उत्तम भोग विलास तथा अपनी और पितरों की सद्गति यह सब काम स्त्रियों के ही अधीन होता है ।

(मनुस्मृति)

|| श्रीशक्तये नमः ||

नारीधर्म-शिक्षा

१—वात्स्यायन कामसूत्रमें नारीधर्म

(चतुर्थ अधिकरण, प्रथम अध्याय)

पति-भक्ति

१—भार्या एकचारिणी रूढ-विश्रम्भा देववत् पतिम् अनुवर्तेत ।

एकचारिणी स्त्री[1] पति में अटल विश्वास रखती हुई उसे देव-तुल्य माने तथा उसी के अनुकूल अपना व्यवहार रक्खे ।

परिवार-पालन

२—तन्मतेन कुटुम्ब-चिन्ताम् आत्मनि सन्निवेशयेत् ।

पति की सम्मति से परिवार का भार अपने ऊपर ले । (पति को अयोग्य समझ कर अथवा उसका विरोध करके नहीं अपि तु उसकी अनुकूलता से)

घरकी सफाई और सजावट

३—वेश्म च शुचि,

घरको सदा पवित्र और साफ-सुथरा रखना चाहिये ।

१—पतिव्रता स्त्री को एकचारिणी कहते हैं ।

४—सुसंमृष्ट-स्थानम्,

घरके प्रत्येक स्थान में झाड़ू लगा रहना चाहिये।

५—विरचित-विविध-कुसुमम्,

घरके भिन्न भिन्न स्थानों में फूलों से तरह तरह की रचनायें बनी रहनी चाहिएँ। (यदि फूल न मिलें तो भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों से चित्र विचित्र फूल बनाकर तथा चौक आदि पूर कर घर को सुशोभित बनाये रखना चाहिए)

६—श्लक्ष्ण-भूमितलम्,

घर के निचले भाग को सदा चिकना रखना चाहिये,

७—हृद्य-दर्शनम्,

घर को ऐसा बनाये रखना चाहिये, जिसके देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाय,

८—त्रिषवणा-चरित-वलिकर्म,

तीनों सन्ध्या अर्थात् प्रातः मध्याह्न तथा सायंकाल बलिकर्म किया रहना चाहिये,

देव-पूजन

* ९—पूजित-देवायतनं कुर्यात्।

घर में जो देवता का मन्दिर या स्थान हो उसकी पूजा-अर्चा यथा समय करनी चाहिए।

१०—नहि अतोऽन्यत् गृहस्थानां चित्तग्राहकमस्तीति गोनर्दीयः।

---

* संख्या से लेकर ६ संखया तक एक ही सूत्र है।

गोनर्दीय आचार्य के मत में घर की सफाई और सुन्दरता से बढकर गृहस्थों के लिये प्रसन्नता की और कोई बात नहीं हो सकती।

परिवार के साथ यथोचित व्यवहार

११—गुरुषु, भृत्यवर्गेषु, नायक-भगिनीषु तत्पतिषु च यथार्हं प्रतिपत्तिः।

गुरुजन (सास ससुर आदि) भृत्यवर्ग (नौकर चाकर) नायक भगिनी—पति की बहन (ननद) और ननदोई इनके साथ यथोचित व्यवहार रक्खे।

खेती तथा बाग-बगीचे की व्यवस्था

१२—परिपूतेषु च हरितशाक-वप्रान्, इक्षुस्तम्बान्, जीरक-सर्षपाऽजमोद-शतपुष्पा-तमाल-गुल्मांश्च कारयेत्।

जहाँ किसी प्रकार की गन्दगी न हो ऐसे स्थानों में क्यारी बनाकर हरे हरे शाक, ईख, जीरा, अजवाइन, सौंफ तथा पान आदि लगवावे।

१३—कुब्जकाऽमलक-मल्लिका-जाती-कुरण्टक-नवमालिका-तगर-नन्द्यावर्त-जपा गुल्मान्,

घर के पास एक फुलवारी लगानी चाहिए जिसमें कुब्जक, आमलक (आँवला) मल्लिका, जाती, कुरण्टक, नवमालिका, तगर नन्द्यावर्त तथा जपा (अढउल) आदि फूल के पौधे लगवावे,

१४—अन्यांश्च बहु-पुष्पान्,

और और प्रकार के भी फूलों को लगवावे।

१५—वालकोशीर-पातालिकाश्च,

वालक और उसीर आदि की क्यारी बनवावे। तथा—

१६—वृक्षवाटिकायां च स्थण्डिलानि मनोज्ञानि कारयेत्।

बगीचे में सुन्दर सुन्दर वेदियों का निर्माण करावे।

१७—मध्ये कूपं वापीं दीर्घिकां वा खानयेत्।

वृक्षवाटिका (फुलवारी) के बीच में कूआँ, बावड़ी अथवा दीर्घिका (दिग्घी) बनवावे।

दुष्ट स्त्रियों से संसर्ग न रखना

१८—भिक्षुकी-श्रमणा-क्षपणा-कुलटा - कुहकेक्षणिका - मूलकारिकाभिः न संसृज्येत।

भिक्षुकी (भिखमंगिन) क्षपणा, श्रमणा (सन्यासिनी) कुलटा (बदमास स्त्री) कुहका (इन्द्रजाल करनेवाली) ईक्षणिका (प्रश्न भाखने वाली) तथा मूलकारिका (वशीकरण जानने वाली) स्त्रियों से संसर्ग न रक्खे।

रुचि-अरुचि तथा पथ्यापथ्य का ज्ञान

१९—भोजने च "रुचितम् इदम् अस्मै, द्वेष्यम् इदम्, पथ्यम् इदम्, अपथ्यम् इदम्" इति च विद्यात् त्यागोपादानार्थम्।

भोजन के पदार्थों में पति के लिये कौन चीज रुचिकर है और कौन चीज अरुचिकर—तथा क्या पथ्य है और क्या अपथ्य इसे अच्छी तरह जाने और जानकर जो जो पदार्थ रुचिकर और हितकर हों उनका संग्रह करे और जो जो पदार्थ अरुचिकर तथा अहितकर हों उनका परित्याग करे। (किस ऋतु में कौन कौन पदार्थ पथ्य होते हैं और कौन अपथ्य इसे आयुर्वेद तथा स्वास्थ्य की पुस्तकों से जानना चाहिये)।

संख्या १२ से संख्या १६ तक एक सूत्र है।

पति-परिचर्या

२०—स्वरं बहिरुपश्रुत्य भवनमागच्छतः "किं कृत्यम्" इति ब्रुवती सज्जा भवनमध्ये तिष्ठेत् ।

घर के बाहर से ही पति का शब्द सुनकर "क्या काम है" ऐसा कहे और काम करने के लिये घर में तैयार रहे ।

२१—परिचारिकामपनुद्य स्वयं पादौ प्रक्षालयेत् ।

परिचारिका (नौकरानी) को हटाकर स्वयं अपने हाथ से पति के पैरों को धोवे । (यह प्र म का सूचक है)

२२—नायकस्य च न विमुक्तभूषणं विजने सन्दर्शने तिष्ठेत् ।

एकान्त में पति के सामने भूषण (गहना) से रहित होकर न उपस्थित होवे ।

अपव्ययपर प्रतिबन्ध

२३—अतिव्ययम् असद्व्ययं वा कुर्वाणं रहसि बोधयेत् ।

यदि पति अतिव्यय (बहुत अधिक खर्च) करते हों अथवा असद्व्यय (खराब कामोंमें खर्च) करते हों तो उन्हें एकान्तमें समझावे ।

उत्सव आदिमें जाना आना

२४—आवाहे विवाहे यज्ञे गमनं, सखीभिः सह गोष्ठीं, देवताभिगमनम् इति अनुज्ञाता कुर्यात् ।

यदि किसीके घर विवाह यज्ञ आदिमें जाना हो, यदि कहीं सखियों के समाज में जाना हो और यदि कहीं देवता के दर्शन के

लिये जाना हो तो पति की आज्ञा लेकर जाना चाहिये। (विना पूछे जहाँ तहाँ आने जाने से अनर्थ होने का भय रहता है)

खेलकूद और मनोरञ्जन

२५—सर्वक्रीडासु च तदानुलौम्येन प्रवृत्तिः।

यदि और भी किसी स्त्रियों के खेलकूद अथवा आमोद प्रमोद में सम्मिलित होना हो तो भी पति की अनुकूलता देखकर ही सम्मिलित होवे।

शयन-जागरण

२६—पश्चात् संवेशनम्, पूर्वम् उत्थानम्, अनवबोधनं च सुप्तस्य।

पतिके सोने के वाद सोना चाहिये और उठने के पहिले उठना चाहिये। और पति सोते हों तो जगाना ठीक नहीं।

२७—महानसं च सुगुप्तं स्याद् दर्शनीयं च।

महानस (रसोईघर) को सुगुप्त (छिपा हुआ; सब के न घुसने योग्य) तथा दर्शनीय (देखने योग्य, सुन्दर) बनाये रक्खे।

पतिद्वारा गल्ती हो जाने पर

२८—नायकापचारेषु किञ्चित् कलुषिता नात्यर्थं निर्वदेत्।

यदि पतिद्वारा कोई अपराध (गल्ती) हो जाय तो बहुत अधिक नाराज न हो और बहुत ज्यादा खरी-खोटी न सुनावे।

२९—साधिक्षेपवचनं तु एनं मित्रजन-मध्यस्थम् एकाकिनं वापि उपालभेत,

यदि पतिके किसी अनुचित वर्ताव के कारण उन्हें उलाहना देना हो तो उनके मित्रों के सामने दे अथवा जब अकेले में बैठे हों तब।

जादू, टोना, सौखैती आदिसे अलग रहना,

३०—न च मूलकारिका स्यात् ।

पति को अपने वश में करने के लिये मन्त्र तन्त्र आदि का प्रयोग न करे, न करावे। (अर्थात् समझा बुझा कर ही अनुकूल करे)

३१—न हि अतोऽन्यत् अप्रत्यय-कारणमस्तीति गोनर्दीयः।

गोनर्दीय आचार्य का कहना है कि मन्त्र-तन्त्र और जादू-टोना आदि के फेर में पड़ने से उस स्त्री के प्रति लोगोंका का बहुत अविश्वास हो जाता है।

कुछ वर्जनीय बातें

३२—दुर्व्याहृतं, दुर्निरीक्षितम्, अन्यतो मन्त्रणं, द्वारदेशाऽवस्थानं निरीक्षणं वा, निष्कुटेषु मन्त्रणं, विविक्तेषु चिरम् अवस्थानम् इति वर्जयेत् ।

कटु और असभ्य वाणी बोलना, रूक्ष और क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना, दूसरे पुरुष से सलाह करना, दरवाजे पर बैठना अथवा बैठे बैठे इधर उधर देखना, फुलवारी आदिमें किसी के साथ गुप्त वार्ता करना, तथा एकान्त स्थान में देर तक ठहरना इन दुर्गुणों से स्त्रियों को दूर रहना चाहिये।

शरीर की सफाई

३३—स्वेद-दन्तपङ्क-दुर्गन्धांश्च बुध्येत, एतद्धि विरागकारणम् ।

स्वेद (पसीना) दन्तपङ्क (दाँतका मैल) और शरीर--वस्त्र आदिका दुर्गन्ध इन से स्त्रियों को सावधान रहना चाहिये। क्यों

संख्या २९-३० एक सूत्र है।

कि यह पति के विराग का कारण है। (इस लिये स्त्रियों को शरीर और वस्त्र की सफाई पर पूरा ध्यान देना चाहिये। बहुत स्त्रियाँ पानी के सुलभ होने पर भी स्नान आदि नहीं करतीं और कपड़ा साफ नहीं रखतीं। जिससे उनके शरीर और वस्त्र से बहुत दुर्गन्ध आता है। इस पर पूरा ध्यान देना चाहिये)।

वेष–भूषा

३४—*बहुभूषणं, विविधकुसुमानुलेपनं, विविधाङ्गराग-समुज्ज्वलं वेष इति आभिगामिको वेषः।

अनेक भूषण, अनेक प्रकार के कुसुमों की माला आदि, अनु-लेपन, विविध प्रकार का अङ्गराग और समुज्ज्वल वेष यह पति के पास जाने का वेष है।

३५—प्रतनु-श्लक्ष्णाल्पदुकूलता, परिमिताभरणम्, सुगन्धिता, नात्युल्ल्वणम् अनुलेपनम्, तथा शुक्लानि अन्यानि पुष्पाणि इति वैहारिको वेषः।

प्रतनु (पतला) श्लक्ष्ण (चिकना, मुलायम) और थोड़ा वस्त्र, इने गिने आभूषण, सुगन्धि, साधारण अनुलेपन तथा अन्यान्य श्वेत पुष्प यह विहार यात्रा आदि में जाने का वेष है।

व्रत-उपवास

३६—*नायकस्य व्रतम् उपवासं च स्वयमपि करणेन अनुवर्तेत।

पति जो व्रत उपवास आदि करते हों उनका स्वयं भी अनुकरण करे।

---

* संख्या ३४-३५ एक सूत्र है।

३७—चारितायाश्च न अहम् अत्र निबन्धनीया इति तद्वचसो निवर्तनम् ।

यदि पति रोकें तो "आप मुझे इस काम में न रोकें" ऐसा कह कर उनकी सम्मति ले ले।

सस्ता सामान खरीदना

३८—मृद्-विदल-काष्ठ-चर्म-लोह-भाण्डानां काले समर्घ-ग्रहणम् ।

मिट्टी, बाँस, काठ, चमड़ा तथा लोहा आदि के वर्तन जिस समय सस्ते दाममें मिलें उस समय खरीद ले।

दुर्लभ वस्तुओं को सुरक्षित रखना

३९—तथा लवण-स्नेहयोश्च गन्धद्रव्य-कटुक-भाण्डौषधानां च दुर्लभानां भवनेषु प्रच्छन्नं निधानम् ।

लवण (नमक) स्नेहद्रव्य (घी तेल आदि) गन्धद्रव्य (कस्तूरी आदि) कटुकभाण्ड (तुमडी आदि) तथा अन्य दुर्लभ औषधि इन पदार्थों को घर में छिपाकर रक्खे। (जिससे ये सामान विगड़ने न पावें और जल्दी खर्च न हों)

साग-सब्जी लगाना

४०—मूलक-आलुक-पालङ्की-दमनक-आम्रातक-एर्वारुक-त्रपुस-वार्ताकु-कूष्माण्ड-अलाबु-सूरण-शुकनास-स्वयंगुप्ता-तिलपर्णिक-अग्निमन्थ-लशुन-पलाण्डु-प्रभृतीनांसर्वौषधीनां च वीजग्रहणं काले वापश्च।

---

* संख्या ३६-३७ एक सूत्र है।

मूली, आलू, पालक, दवँना, अमड़ा, ककड़ी, खीरा, भंटा, कुम्हड़ा, लौकी, सूरन, शुकनासा (सेमि) कवाछ, तिलपर्णिका, अग्निमन्थ, लहसुन, प्याज तथा और भी आवश्यक औषधियों का बीआ जुटाकर रखना चाहिये और उन्हें समय पर बोना चाहिये।

गोपनीय वस्तुओं और बातों का गोपन

४१—स्वयं च सारस्य परेभ्योऽनाख्यानम्,

अपने पास जो दुर्लभ और उत्तम पदार्थ हों उन्हें दूसरे को नहीं बतलाना चाहिये।

४२—भर्तृ-मन्त्रितस्य च।

पति के साथ जो सलाह की गई हो अथवा पति की जो गुप्त बातें हों उन्हें भी दूसरों को न बतलावे।

गुणों में सब स्त्रियों से आगे रहना

४३—समानाश्च स्त्रियः कौशलेन; उज्ज्वलतया, पाकेन, मानेन तथा उपचारैः अतिशयीत।

अपने बराबरी की जो स्त्रियाँ हों उनसे चतुराई में, शरीर वस्त्र और घर की सफाई में, सुन्दर रसोई बनाने में, इज्जत प्रतिष्ठा में तथा पति और सास ससुर की सेवा में आगे बढ़ी रहे। (अपना सब काम सबसे अच्छा रक्खे)

वार्षिक आय-व्यय की गणना

४४—सांवत्सरिकम् आयं संख्याय तदनुरूपं व्ययं कुर्यात्।

वार्षिक (सालाना) आमदनी का हिसाब लगाकर तदनुकूल खर्च करे। (इससे ऋण नहीं होने पावेगा)

संख्या ४१-४२ एक सूत्र है।

घी आदिका संग्रह

४५—*भोजनावशिष्टात् गोरसात् सारग्रहणम्,

जो गोरस (दूध, घी) भोजन से बँच जाय तो उससे घी आदि निकाले ।

४६—तथा तैलगुडयोः,

तेल और गुड़ का भी बनाना और उसको भिन्न भिन्न काम में लाना जाने ।

सूतकी कताई-बुनाई

४७—कार्पासस्य च सूत्रकर्तनम्,

कपास का सूत कातना जाने ।

४८—सूत्रस्य वानम्,

सूत से कपड़ा बीनना जाने ।

उपयोगी वस्तुओं का संग्रह

४९—शिक्य-रज्जु-पाश-वल्कल-संग्रहणम्,

छींका (सिकहर) डोर, पास तथा वल्कल (बोकला) आदि का बनाना तथा संग्रह करना जाने ।

किसी वस्तु की हानि न होने देना

५०—कुट्टन-कण्डनावेक्षणम्,

कूटने छाँटने आदि की विधि जाने और उसकी देख भाल करे।

५१—आचाम-मण्ड-तुष-कण-कुट्यङ्गराणाम् उपयोजनम्,

आचाम (पीने लायक वस्तु) मण्ड (माड़) तुस (भूसी) कण (खुद्दी) कुटी (कुट्टी) अङ्गार (कोयला) इनको भिन्न भिन्न काम में लावे—नुकसान न करे।

---

* संख्या ४५ से ५५ तक एक सूत्र है ।

भृत्यों का भरण-पोषण

५२—भृत्य-वेतन-भरण-ज्ञानम्,

नौकरों के वेतन देने और उनके भरण-पोषण की विधि जाने।

सवारी आदिकी सुव्यवस्था

५३—वाहन-विधियोगाः,

वाहन (सवारी) रखने तथा उनके खाने-पीने और मरम्मत आदि के रखने की विधि जाने।

पशुपक्षियों से प्रेम और उनकी देखभाल

५४—मेष-कुक्कुट-लावक-शुक-सारिका-परभृत-मयूर-वानर-मृगाणाम् अवेक्षणम्,

मेष (भेड) कुक्कुट (मुर्गा) लावक (बटेर) शुक (सुग्गा) सारिका (मैना) परभृत (कबूतर) मयूर (मोर) वानर, मृग (हरिन) यह सब यदि घर में पोषे गये हों तो उनको खिलाना पिलाना और देखरेख करना जाने।

दैनिक आय-व्यय की गणना

५५—दैवसिकाय-व्यय-पिण्डीकरणम् इति च विद्यात्।

प्रतिदिन जितनी आमदनी और खर्च हो उसका हिसाब लगाना भी जाने।

फटे पुराने कपड़ोंका सदुपयोग

५६—तज्जघन्यानां च जीर्णवाससां सञ्चयः,

पति तथा और घर के लोगों के फटे पुराने कपड़ों को इकट्ठा करके रखना चाहिये, उन्हें फेकना नहीं चाहिये।

५७—तैः विविधरागैः शुद्धैर्वा कृतकर्मणां परिचारकाणाम् अनुग्रहो मानार्थेषु च दानम्,

पुराने कपड़ों को विविध रङ्गों में रंग कर अथवा बिना रंगे ही धुलाकर घर में काम करनेवाले नौकर नौकरानियों को प्रसन्न रखने के लिये तथा उनका मान बढ़ाने के लिये देवे।

५८—अन्यत्र वा उपयोगः।

अथवा दूसरे दूसरे काम में लावे। जैसे—घर लीपने के लिये, लालटेन आदि साफ करने के लिये, दीआ की बत्ती बनाने के लिये तथा कुछ सामान बाँध कर रखने के लिये या भिखमंगे आदि को देने के लिये।

सिर्का अँचार आदिका निर्माण और सुरक्षा

५९—सुराकुम्भीनाम् आसवकुम्भीनां च स्थापनं, तदुपयोगः क्रय-विक्रयाऽय-व्ययाऽवेक्षणम्।

घड़ों में सुरा (मदिरा) तथा आसव आदि बनाकर रक्खे, उनको समय समय पर काम में लावे, उनको खरीदे और बेंचे तथा उनकी आमदनी और खर्च का हिसाब रक्खे। (ब्राह्मण की स्त्री को मदिरा नहीं बनाना चाहिये। सिर्का अँचार आदि तो बनाकर रखना ही चाहिये)

पतिके मित्रों का स्वागत-सत्कार

६०—नायकमित्राणां च स्रगनुलेपन-ताम्बूलदानैः पूजनं न्यायतः,

यदि पति के मित्र घर पर आ जाँय तो उनका फूल-माला, अनुलेपन तथा पान कसैली आदि से उचित सत्कार करे। (ऐसा नहीं कि मारे लाज के कुछ पूछे ही नहीं और मित्रजी सीधे लौट जाँय।

संख्या ५६ से ५८ तक एक सूत्र है।

यदि स्वयं न हो सके तो किसी दूसरे के द्वारा तो सत्कार करा ही देना चाहिये

सास-ससुर आदि की सेवा और सम्मान

६१—श्वश्रू-श्वसुर-परिचर्या,

सास ससुर आदि श्रेष्ठ जनों की उचित सेवा-सत्कार करे।

६२—तत्पारतन्त्र्यम्,

सास ससुर आदि की आज्ञा में रहे।

६३—अनुत्तर-वादिता,

उनको जबाब न दे।

हँसने-बोलने में संयम

६४—परिमिताऽप्रचण्डाऽलापकरणम्,

परिमित (थोड़ा) तथा अप्रचण्ड (मधुर) आलाप (बात-चीत) करे।

६५—अनुच्चैर्हासः,

बहुत जोरसे न हँसे।

समदर्शिता

६६—तत्-प्रियाप्रियेषु स्वप्रियाप्रियेषु इव वृत्तिः,

अपने प्रिय-अप्रिय की भाँति ही उनके प्रिय-अप्रिय को भी जाने।

अभिमान-हीनता

६७—*भोगेषु अनुत्सेकः,

अधिक भोग-सामग्री होने पर उसका घमण्ड न करे।

---

* संख्या ६० से लेकर ७१ तक एक सूत्र है।

परिजनों के साथ उदारता

६८—परिजने दाक्षिण्यम्,

परिजनों अर्थात् नौकर चाकरों और घर के अन्य लोगों के साथ उदार व्यवहार रक्खे।

६९—नायकस्य अनिवेद्य न कस्मैचिद् दानम्,

पति की बिना राय लिये किसी को कुछ न दे।

नौकरों की देखरेख और उनका सम्मान

७०—स्वकर्मसु भृत्यजन-नियमनम्,

नौकरों को अपने अपने काम में लगावे और सावधान रक्खे।

७१—उत्सवेसु च अस्य पूजनम्।

यदि घर में विवाह, यज्ञ आदि कोई उत्सव हो तो उस समय नौकरों का अधिक सत्कार करे। (अर्थात् नवीन वस्त्र आदि देवे)

इति एकचारिणीवृत्तम्

यह एकचारिणी स्त्रियों के नियम हैं।

× × × ×

अथ प्रवासचर्या

पति के परदेश चले जाने पर स्त्रियों के आहार-विहार में कुछ परिवर्तन होने चाहिये। उस अवस्था के नियम निम्नाङ्कित हैं—

७२—प्रवासे च मङ्गलमात्राभरणा देवतोपवासपरा वार्तायां स्थिता गृहान् अवेक्षेत।

यदि पति परदेश में रहें तो मङ्गल-सूचनार्थ थोड़ा आभूषण पहने, देवपूजन तथा व्रत उपवास में लगी रहे और पति के कुशल समाचारको (पत्र आदि से) जानती हुई घर के कामकाज को देखे-सम्भाले।

७३—शय्या च गुरुजनमूले।

सास, जेठानी आदि श्रेष्ठ जनों के पास ही सोवे।

७४—तदभिमता कार्यनिष्पत्तिः।

उनकी आज्ञा से ही सब काम करे।

७५—नायकाभिमतानां च अर्थानाम् अर्जने प्रतिसंस्कारे च यत्नः।

जो पदार्थ या काम पति को प्रिय हों उनके संग्रह तथा सत्कार में लगी रहे।

७६—नित्य-नैमित्तिकेषु कर्मसु उचितो व्ययः।

जो काम नित्य होते हैं और जो काम किसी विशेष अवसर पर किये जाते हैं उनमें उचित खर्च करे। नित्य काम—जैसे भोजन आदि, नैमित्तिक काम जैसे यज्ञ, पूजा आदि।

७७—तदारब्धानां च कर्मणां समापने मतिः।

पति जो काम आरम्भ कर गये हों—जैसे मन्दिर आदि बनवाना, स्कूल-पाठशाला चलाना, कोई और धर्मकार्य आदि करना उन्हें पूरा करने का विचार रक्खे।

७८—[1]ज्ञातिकुलस्य अनभिगमनम् अन्यत्र व्यसनोत्सवाभ्याम्।

मरण आदि दुःख तथा विवाह आदि उत्सव के अतिरिक्त बिना कारण जाति-भाइयों के घर न जावे।

---

* संख्या ७३ से ७५ तक एक सूत्र है।

× ७६—७७ एक सूत्र है।

७९—तत्रापि नायक-परिजनाधिष्ठिताया न अतिकालम् अवस्थानम् ।

वहाँ भी पति के परिजनों के साथ जावे, तथा अधिक देर तक न ठहरे, (जितनी देर तक आवश्यकता हो उतनी ही देर तक ठहरे)

८०—अपरिवर्तित-प्रवासवेषता च ।

प्रवासोचित वेष का परिवर्तन न करे।

८१—गुरुजनाऽनुज्ञातानां करणम् उपवासानाम् ।

वही व्रत उपवास आदि करे जिस पर सास ससुर आदि की अनुमति हो। (अपने मन से या हठ से न करे)।

८२—[२]परिचारकैः शुचिभिः आज्ञाधिष्ठितैः अनुमतेन क्रय-विक्रय-कर्मणा सारस्यापूरणम् ।

पवित्र विचार वाले तथा आज्ञानुसार चलने वाले परिजनों की राय से क्रय-विक्रय (खरीद-विक्री) द्वारा गृहोपयोगी आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करे।

८३—तनूकरणं च शक्त्या व्ययानाम् ।

जहाँ तक हो सके खर्चा कम करे।

८४—[३]आगते च प्रकृतिस्थाया एव प्रथमतो दर्शनम् ।

परदेश से पति के आजाने पर उसी वेष से पति का प्रथम दर्शन करे।

१—संख्या ७८ से ८० तक एक सूत्र है। २—८२-८३एक सूत्र है।

८५—दैवतपूजनम्, उपहाराणां च आहरणम्।
देवता पूजे तथा उपहार चढ़ावे।

इति प्रवासचर्या।

धर्मम् अर्थं च कामं च लभन्ते स्थानमेव च।
निःसपत्नं च भर्तारं नार्यः सद्-वृत्तमाश्रिताः॥

जो नारियाँ ऊपर लिखे हुए सदाचारों तथा नियमों का पालन करती हैं वे धर्म, अर्थ (धन-दौलत) काम (सुख तथा भोग-विलास) और स्थान (समाज में इज्जत प्रतिष्ठा) पाती हैं और उनके पति भी सदा उनके अनुकूल और प्रसन्न रहते हैं।

३—मनुस्मृति में नारीधर्म

बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता।
न स्वातन्त्र्येण कर्तव्यं किञ्चित् कार्यं गृहेष्वपि॥

स्त्री बाला हो, युवती हो, अथवा वृद्धा हो किसी अवस्था में उसे बिलकुल स्वतन्त्र होकर घर का भी काम नहीं करना चाहिये।

बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम्॥

स्त्री को बालकपन में पिता के वश में रहना चाहिये, यौवन में पति के वश में रहना चाहिये और पति के मर जाने पर पुत्रों के वश में रहना चाहिये। स्त्री को कभी भी सर्वथा स्वतन्त्र रहना अच्छा नहीं।

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्त-हस्तया॥

---

१ ८४-८५ एक सूत्र है।

स्त्री को सदा प्रसन्न रहना चाहिये, घर के काम-काज में खूब चतुर होना चाहिये, घर के सब सामान को अच्छी तरह साफ-सुथरा रखना चाहिये और हाथ खोलकर खर्च नहीं करना चाहिये।

यस्मै दद्यात् पिता त्वेनां भ्राता वानुमते पितुः।
तं शुश्रूषेत जीवन्तं संस्थितं च न लङ्घयेत्॥

पिता अथवा पिता की सम्मति से भाई जिस पुरुष के साथ स्त्री का विवाह कर दे उसकी जीवन भर सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और उसके मर जाने पर पुनः दूसरा विवाह नहीं करना चाहिये।

(अ० ५, १४७-१४८, १५०-१५१,)

मृते जीवति वा पत्यौ या नान्यमुपगच्छति।
सेह कीर्तिमवाप्नोति मोदते चोमया सह॥

(याज्ञवल्क्य अ० १, श्लो० ७५)

जो स्त्री पति के जीते हुए अथवा मरजाने पर दूसरे पुरुष के साथ सम्बन्ध नहीं करती वह इस लोक में सर्वत्र यश प्राप्त करती है और मर जाने पर स्वर्ग में पार्वतीजी के साथ आनन्द करती है।

३—श्रीमद्भागवत में नारीधर्म

स्त्रीणाञ्च पतिदेवानां तच्छुश्रूषाऽनुकूलता।
तद्बन्धुष्वनुवृत्तिश्च नित्यं तद् - व्रतधारणम्॥

पति को देवता समझने वाली स्त्रियों का धर्म यह है—

तत्-शुश्रूषा—पति की सेवा-सुश्रूषा तथा आदर-सत्कार करना,

अनुकूलता—सुख और दुःख में पति के अनुकूल रहना।

तद्बन्धुषु अनुवृत्तिः—पति के भाई-बन्धुओं के साथ प्रेम रखना।

नित्यं तद्व्रतधारणम्—पति का जो नियम हो उसके अनुसार ही स्वयं भी आचरण करना।

सम्मार्जनोपलेपाभ्यां गृह-मण्डन-वर्तनैः।
स्वयञ्च मण्डिता नित्यं परिमृष्ट—परिच्छदा॥

सम्मार्जन—घर दुआर-आङ्गन आदि को बहार कर ठीक रक्खे, उपलेप—घर को लीप कर सुन्दर बनाये रहे, गृहमण्डन-वर्तनैः—बहारने और लीपने के सिवाय अन्य उपायों से भी घर को सुसज्जित रक्खे जैसे—दीवालों को रंग कर, दीवालों में विविध प्रकार की चित्रकारी करके, घर में देवी-देवताओं तथा साधु महात्माओं विद्वानों और नेताओं के चित्र लटका कर तथा चौक पूर कर। स्वयंच मण्डिता नित्यम्—अपने शरीर को भी सुन्दर वस्त्र तथा भूषणों से सुशोभित रक्खे। परिमृष्ट परिच्छदा—घर के सब सामान को जैसे—वर्तन, खाट, चौकी, कुर्सी, पेटी, जाँत, ओखर-मूसल आदि को बराबर साफ़ सुथरा रक्खे।

कामैरुच्चावचैः साध्वी प्रश्रयेण दमेन च।
वाक्यैः सत्यैः प्रियैः प्रेम्णा काले काले भजेत् पतिम्॥

साध्वी—पतिव्रता स्त्री को चाहिये कि उच्चावचैः कामैः—तरह तरह के पदार्थों द्वारा, प्रश्रयेण—नम्रता से, दमेन—शान्ति से, सत्यैः प्रियैः वाक्यैः—सत्य और प्रिय वचनों से, प्रेम्णा—प्रेम से सदा पति की सेवा करे।

सन्तुष्टाऽलोलुपा दक्षा धर्मज्ञा प्रिय-सत्यवाक्।
अप्रमत्ता शुचिः स्निग्धा पतिं त्वपतितं भजेत्॥

(सप्तम स्कन्ध अ० ११)

स्त्री को चाहिये कि सन्तुष्टा—सदा सन्तुष्ट रहे, अलोलुपा—लालची न हो, दक्षा—घर के सब काम काज में चतुर हो, धर्मज्ञा—क्या धर्म है और क्या अधर्म है इसको ठीक-ठीक जाने, प्रिय-सत्य-वाक्—प्रिय और सत्य वचन बोलने वाली हो, अप्रमत्ता—किसी काम में लापरवाही न करे, सब काम सावधानी से करे, शुचिः—शरीर, वस्त्र और मन-वाणी से पवित्र रहे, स्निग्धा—प्रिय और मधुर व्यवहार रक्खे तथा अपतितं पतिं भजेत्—जो पति पतित अर्थात् पापी न हो उसकी सेवा करे। यदि पति से कोई बड़ा पाप हो जाय तो वह जब तक प्रायश्चित करके शुद्ध न हो जाय तब तक उससे व्यवहार वर्जित रक्खे।

४—कौन २ काम स्त्रियों को नहीं करना चाहिये।

(व्यास स्मृति अ० २ श्लो० ३५)

प्रमादोन्माद-रोषेर्ष्या-वञ्चनं चातिमानिताम्।
पैशुन्य - हिंसा - विद्वेष - महाहङ्कार - धूर्तताः।
नास्तिक्य-साहस-स्तेय-दम्भान् साध्वी विवर्जयेत्॥

प्रमाद (असावधानी करना) उन्माद (पागल की तरह बोलना और काम करना) रोष (क्रोध करना) ईर्ष्या (किसी की उन्नति देखकर कुढ़ना) वञ्चन (धोखा देना) अतिमानिता (अभिमान करना) पैशुन्य (चुगली करना—झगड़ा लगाना—यहाँ की बात वहाँ और वहाँ की बात यहाँ कहना) हिंसा (किसी को कष्ट पहुँचाना—तकलीफ देना—जादू-टोना करके किसी को मारना) विद्वेष (वैर रखना) महाहङ्कार (बहुत घमण्ड करना—अपनी जाति, धन, भूषण, रूप, सोहाग आदि का घमण्ड करना) धूर्तता (धूर्तई करना, छल कपट रखना) नास्तिक्य (ईश्वर और परलोक को न मानना) साहस (अपने

बल-बुद्धि से अधिक काम करना और अधिक बातें करना) स्तेय (चोरी करना—घर का अन्न-पानी चुराना—बेचना आदि) दम्भ (पाषण्ड करना, अपति करना) ये सब स्त्रियों के लोक-परलोक बिगाड़ने वाले दोष हैं। इनके कारण ही घर में बराबर झगड़ा भी होता रहता है। अतः कुलीन स्त्रियों को इन दोषों से दूर रहना चाहिये।

५—कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी नहीं रहती हैं?

प्रकीर्णभाण्डाम्, अनवेक्ष्य-कारिणीम्,
सदा च भर्तुः प्रतिकूल-वादिनीम्।
परस्य वेश्माभिरताम्, अलज्जाम्,
एवंविधां स्त्रीं परिवर्जयामि ॥

लक्ष्मी जी कहती हैं कि जो स्त्री अपने घर के वर्तनों और सामानों को इधर-उधर फेंकी रहती है, जो स्त्री बिना सोचे विचारे और बिना समझे-बूझे काम करती है, जो सदा पति के प्रतिकूल रहती है, जो बराबर दूसरे-दूसरे लोगों के घर आया जाया करती है और जो लज्जा और संकोच से रहित होती है ऐसी स्त्री के पास मैं नहीं रहती हूँ।

कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी रहती हैं?

सत्यासु नित्य-प्रिय-दर्शनासु
सौभाग्य युक्तासु गुणान्वितासु।
वसामि नारीषु, पतिव्रतासु।
कल्याणशीलासु विभूषितासु ॥

पुनः लक्ष्मी जी कहती हैं कि जो स्त्रियाँ सदा सत्य बोलती हैं, कभी झूठ नहीं बोलतीं, सर्वदा देखने में प्रसन्न मालूम पड़ती

हैं, सौभाग्य से युक्त होती हैं, जिन स्त्रियों में सभी अच्छे अच्छे गुण होते हैं, जो पतिव्रता होती हैं, जिनका शील-स्वभाव, विचार-आचार सब सुन्दर और मङ्गल होता है और जो वस्त्र एवं भूषण आदि से सुशोभित रहती हैं उन्हीं स्त्रियों के पास मैं रहती हूँ ॥

(महाभारत, अनु० अ० ११)

६—*किस घरमें दरिद्रता का निवास होता है ?*

रात्रौ दिवा गृहे यस्मिन् दम्पत्योः कलहो भवेत् ।
निराशा यान्त्यतिथयः तस्मिन् स्थाने रतिर्मम ॥

दरिद्रता कहती है कि जिस घरमें रातदिन स्त्री पुरुष में झगड़ा लगा रहता है और जिस घर से अतिथि लोग निराश होकर लौट जाते हैं उसी घरमें मैं निवास करती हूँ ।

वृद्ध-सज्जन-मित्राणां यत्र स्याद् अवमाननम् ।
निष्ठुरं भाषणं यत्र तत्र नित्यं वसाम्यहम् ॥

जिस घरमें वृद्ध लोगों का, सज्जन पुरुषों का और मित्रों का अपमान होता है और जिस घरके लोग आपस में मधुर वाणी नहीं बोलते वहाँ मैं सर्वदा निवास करती हूँ ।

दुराचार-रता यत्र पर-द्रव्यापहारिणः ।
पर-दार-रताश्चापि तस्मिन् स्थाने रतिर्मम ॥

जिसघर के लोग दुराचारी होते हैं, दूसरों का धन चुराया करते हैं और परायी स्त्रियों से प्रेम रखते हैं उस घरमें मैं बहुत आनन्द से रहती हूँ ।

गोवधो मद्यपानं च यत्र संजायतेऽनिशम् ।
ब्रह्महत्यादि-पापानि तस्मिन् स्थाने रतिर्मम ॥

जिस घरमें गोहत्या होती है अथवा ठीक तरह न खिलाने पिलाने के कारण गाय बैलों को कष्ट होता है, जहाँ के लोग मद्य (शराब) पीते हैं और जहाँ ब्रह्महत्या आदि पाप होते हैं उस घरमें हमें बहुत अच्छा लगता है।

७—किस घरमें दरिद्रता नहीं जाती है ?

उद्यमी नीतिकुशलो धर्मयुक्तः प्रियंवदः।
गुरु-पूजा-रतो यत्र तस्मिन्नैव वसाम्यहम् ॥
(कार्तिक-माहात्म्य)

दरिद्रता कहती है कि जिस घरके सब पुरुष और स्त्री उद्यमी होते हैं (अर्थात् आलसी और निरुद्योगी नहीं होते), जिस घर के सब लोग नीति में निपुण होते हैं (अर्थात् व्यवहार में चतुर होते हैं), जिस घरके स्त्री पुरुष धर्मयुक्त अर्थात् धर्म के रास्ते पर चलते हैं, जिस घरके सब लोग आपस में प्रिय वचन बोलते हैं (न कठोर वचन बोलते हैं और न झगड़ा करते हैं) और जहाँ के लोग अपने से बड़े लोगों का आदर-सत्कार करते हैं उस घरमें मैं कभी नहीं जाती हूँ। इसका अर्थ यह है कि जिन कारणों से घरमें दरिद्रता रहती है और लक्ष्मी नहीं आती उन दोषों से स्त्रियों को बचा रहना चाहिये और घर को भी बचाये रहना चाहिये। तभी घरमें सुख शान्ति रह सकती है।

८—स्त्रियों के बिगड़ने के कारण

स्वातन्त्र्यं, पितृमन्दिरे निवसतिः, यात्रोत्सवे सङ्गतिः
गोष्ठी पूरुष-सन्निधौ अनियमो वासो विदेशे सदा।
संसर्गः सह पुंश्चलीभिरसकृत् वृत्तेर्निजायाः क्षतिः
पत्युर्वार्धकमीर्षितं प्रवसनं नाशस्य हेतुः स्त्रियाः ॥
(पञ्चतन्त्र)

१—स्वातन्त्र्यम्—सदा स्वतंत्र रहना, किसी का शासन न मानना,
२—पितृमन्दिरे निवसतिः—बराबर पिता के घर में रहना,
३—यात्रोत्सवे सङ्गतिः—यात्रा और उत्सव आदि में विशेष कर आना जाना,
४—गोष्ठी पुरुष-सन्निधौ—पुरुषों के साथ बैठकी करना,
५—अनियमो वासो विदेशे सदा—विशेषरूप से विदेश में रहना, अथवा जब चाहे तब विदेश में रहना,
६—पुंश्चलीभिः सह असकृत् संसर्गः—पुंश्चली अर्थात् बदमास स्त्रियों के साथ ज्यादा संसर्ग रखना,
७—निजायाः वृत्तेः क्षतिः—अपनी जीविका का नाश हो जाना,
८—पत्युः वार्धकम्—पति का वृद्ध हो जाना,
९—ईर्षितं प्रवसनम्—ईर्षा से (क्रोध से) बाहर निकल जाना,

ये सब दोष स्त्रियों के बिगड जाने के कारण हैं। अतः कुलीन स्त्रियों को इन दोषों से बचे रहना चाहिये और अपनी लडकियों को भी बचाये रहना चाहिये।

६—कुलीन स्त्रियों के कर्तव्य

भक्तिः प्रेयसि, संश्रितेषु करुणा, श्वश्रूषु नम्रं शिरः
प्रीतिर्ज्ञातिषु, गौरवं गुरुजने, क्षान्तिः कृतागस्यपि।
अम्लानः कुलयोषितां व्रतविधिः सोऽयं विधेयं पुनः
मद्भर्तुर्दयिता इति प्रियसखीवृत्तिः सपत्नीष्वपि॥
(सुभाषित-संग्रह)

१—प्रेयसि भक्तिः—पतिमें भक्ति और प्रेम रखना,
२—संश्रितेषु करुणा—अपने आश्रित नौकर-नौकरानियों पर कृपा रखना,
३—श्वश्रूषु नम्रं शिरः—सास-ससुर के सामने नम्र होकर रहना,
४—ज्ञातिषु प्रीतिः—भाई-बन्धुओं में प्रेम रखना,

५—गुरुजने गौरवम्—अपने से जो वडे हों उनका आदर करना,
६—कृतागस्यपि क्षान्तिः—किसी से कुछ अपराध हो जाने पर भी क्षमा कर देना,
७—मद्भर्तुः दयिता इति सपत्नीष्वपि प्रियसखीवृत्तिः—यदि सपत्नी (सवत) हो तो अपने पति की प्रिया समझ कर उसे प्रिय सखी के समान समझना,

ये सब कुलीन स्त्रियों के कर्तव्य हैं जिनके करने से उनकी प्रतिष्ठा होती है और लोक-परलोक बनता है।

१०—लज्जाशील स्त्रियों का स्वभाव।

पदन्यासो गेहाद् वहिरहि—फणाऽरोपण--समो
निजावासाद् अन्यद्भवनमपर—द्वीप—तुलितम्।
वचो लोकाऽलभ्यं कृपण—धन—तुल्यं मृगदृशः
पुमान् अन्यः कान्ताद् विधुरिव चतुर्थी-समुदितः॥

(सुभाषित-संग्रह)

गेहात्—घरसे - वहिः - वाहर पदन्यासः—पैर रखना अहि-फणारोपण-समः—सर्पके फन पर पैर रखने के समान होता है। निजावासात्—अपने घर से अन्यद् भवनम्—दूसरा घर अपर-द्वीप-तुलितम्—एक दूसरे द्वीप के समान दूर मालूम पड़ता है। उनका वचः—वचन कृपण-धन-तुल्यं—कृपण के धनके समान लोकाऽलभ्यं—अन्य लोगों के लिये अलभ्य होता है और कान्तात्—अपने पति से अन्यः—दूसरा पुमान्—पुरुष चतुर्थी समुदितः—चौथ के विधुः इव—चन्द्रमा के समान होता है।

अभिप्राय यह है कि लज्जाशील स्त्रियाँ घर के वाहर नहीं निकलतीं, दूसरे लोगों के घर पर बहुत कम जाती हैं, उनकी बोली सब लोग नहीं सुन पाते और पतिको छोडकर पर पुरुष को देखना वे कलङ्क की बात समझती हैं।

संक्षिप्त पूजा-पद्धति

प्रायः स्त्रियाँ समय समय पर शिवजी दुर्गाजी तथा तुलसीजी की पूजा किया करती हैं अतः यहाँ पर इन देवताओं के पूजन की संक्षिप्त विधि नीचे दी जा रही है। पहले किसी विद्वान् या विदुषी से पूछ कर इसे शुद्ध शुद्ध बाँचने का अभ्यास कर लेना चाहिए तथा अर्थ भी समझ लेना चाहिए।

अथ शिवपूजनम्

शरीर पवित्र करने का मन्त्र

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

संकल्पः

अद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्ध्यर्थं परलोके सद्गतिप्राप्तये च अहं यथोपस्थित-सामग्रीभिः श्रीमहेश्वर-पूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—

ध्याये नित्यं महेशं, रजतगिरि-निभं, चारु-चन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं, परशु-मृगवराऽभीति-हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं, समन्तात्, स्तुतममरगणैः, व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं, निखिल-भय-हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

पूजनम्—

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्री महेश्वराय नमः ।
अर्घ्य—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
दीपं—दीपं दर्शयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार—

कर्पूर - गौरं करुणाऽवतारं
संसार-सारं भुजगेन्द्र - हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी-सहितं नमामि ॥

क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं च यद् भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

अथ दुर्गा-पूजनम्

संकल्पः

अद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्धयर्थं परलोके सद्गति-प्राप्तये च अहं यथोपस्थित-सामग्रीभिः श्रीदुर्गा-पूजनं करिष्ये ।

ध्यानम्—

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान्, शूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां, सर्वाङ्ग-भूषावृताम् ।
नीलाश्म-द्युति मास्य-पाद-दशकां, सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो, हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

पूजनम्—

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
अर्घ्य—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
सिन्दूर—सिन्दूरं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।

धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
दीप—दीपं दर्शयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥
शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

अथ तुलसी-पूजनम्

संकल्प

अद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्ध्यर्थं परलोके सद्गतिप्राप्त्यर्थे च अहं यथोपस्थितसामग्रीभिः श्री तुलसी-पूजनं करिष्ये ।

ध्यानम्

ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम् ।
प्रसन्नां पद्मवदनां वराऽभय - चतुर्भुजाम् ॥

पूजनम्

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
अर्घ्य—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
सिन्दूर—सिन्दूरं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
दीप—दीपं दर्शयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार

नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्नये ।
नम आहवनीयाय तुलस्यै ते नमो नमः ॥
अभीष्ट-फल-सिद्धिं च सदा देहि हरि प्रिये ।
पत्युरायुश्च भाग्यं च कृपादृष्ट्या विलोकय ॥

सूर्यार्घ देने का मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर ॥

चन्द्रार्घ देने का मन्त्र

क्षीरोदार्णव - सम्भूत अत्रिगोत्र - समुद्भव ।
गृहणार्घं मया दत्तं रोहिणी - सहित प्रभो ॥

प्रदक्षिणा करने का मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण-पदे पदे ॥

॥ इति ॥

श्रीमती चम्पा देवी सिंह	,,	,,	,,	५)
,, दुलारी देवी सिंह	,,	,,	,,	५)
,, जानकी देवी सिंह	ग्रा० सिरसिया	पो० भिंगारी,	देवरिया,	५)
,, तिलकधारी देवी सिंह	ग्रा० पो० जगतौली		छपरा,	५)
,, हीरा देवी सिंह	,,	,,	,,	५)
,, रामसखी देवी सिंह	,,	,,	,,	५)
,, लज्ञावती देवी श्रीवास्तव	,,	,,	,,	५)
,, ललिता देवी श्रीवास्तव	,,	,,	,,	५)
,, विद्यावती देवी श्रीवास्तव	,,	,,	,,	५)
,, रामदुलारी देवी श्रीवास्तव	ग्रा० कोठिलवा	पो० भाटपार रानी	देवरिया,	५)
,, रामकिशोरी देवी श्रीवास्तव	ग्रा० लंगडपुरा	पो० मैरवा,	सारन	५)

कार्यालय के संस्कृत प्रचारोपयोगी

साहित्य की सूची

(*प्रकाशित साहित्य*)

विद्यार्थी बंधुकोश (*हिन्दी से संस्कृत*) १)
संस्कृत गीत माला (नये तर्जों में संस्कृत के गीत) =)
संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में नेताओं तथा विद्वानों के विचार ||=)
प्रारम्भिक संस्कृत वाक्य संग्रह तथा आवश्यक शब्द संग्रह =)
स्तुति-प्रार्थना (*प्रत्येक देवता की स्तुतियाँ*) =)
द्रौपदी-सत्यभामा-संवाद (स्त्रीधर्म के विषय में) ≡)
महिलोपयोगी संस्कृत गीत (विवाह आदि में भोजन के अवसर पर गाने योग्य संस्कृतगीत, साथही कौली तथा झूमर आदि भी) =)
दीवालों में लगाने योग्य संस्कृत के २१ आदर्श वचन =)

पत्र व्यवहार करने का पता—

व्यवस्थापक—सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वैरोलिया चैरिटी ट्रस्ट भवन
टेढ़ीनीम काशी